



अभिव्यक्ति

राजभाषा विभाग,
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे,
रायपुर मंडल
अंक : 17, नवंबर 2022

मार्गदर्शक
संजीव कुमार,
मंडल रेल प्रबंधक

मुख्य संपादक
लोकेश विश्नीई,
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक
निकेश कुमार पाण्डेय,
राजभाषा अधिकारी

उप संपादक
मनोज कुमार साहू
वरिष्ठ अनुवादक

राष्ट्रीय एकता दिवस एवं सतर्कता जागरूकता सप्ताह पर विविध आयोजन

दिनांक 31.10.2022 को रायपुर रेल मंडल द्वारा राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय एकता दौड़ (रन फॉर यूनिटी) का आयोजन प्रातः 7.30 बजे किया गया। मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार के नेतृत्व में रन फॉर यूनिटी केन्द्रीय विद्यालय, डब्ल्यू. आर. एस. कॉलोनी से प्रारंभ हुई एवं मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, रायपुर पर समाप्त हुई।



इस दौड़ में अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री लोकेश विश्नीई सहित मंडल के अधिकारियों, कर्मचारियों दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे खेल एसोसिएशन, सिविल डिफेंस एवं दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे स्काउट एवं गाइड के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर मंडल में रेलवे के दिन-प्रतिदिन के कार्यकलापों में पारदर्शिता को बरकरार रखने एवं रेल उपभोक्ताओं को जागरूक करने के उद्देश्य से दिनांक 31 अक्टूबर से 06 नवंबर 2022 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया।



इस अवसर पर दिनांक 31.10.2022 को मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार ने मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा दिलाई जिसमें उनके द्वारा सदैव ईमानदारी तथा सत्यनिष्ठा के उच्चतम मानकों के प्रति वचनबद्धता का पालन करते हुए भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष में साथ देने जीवन के सभी क्षेत्रों में ईमानदारी तथा कानून के नियमों का पालन करने, न रिश्तत लेने और न ही रिश्तत देने, सभी कार्य ईमानदारी तथा पारदर्शी रीति से करने तथा अपने निजी आचरण में ईमानदारी दिखाने की बातें कही गईं।



दिनांक 31 अक्टूबर 2022 को ही मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार द्वारा मंडल सुरक्षा आयुक्त, रेल सुरक्षा बल श्री संजय गुप्ता की अगुवाई में आरपीएफ जवानों द्वारा प्रस्तुत परेड की सलामी ली गई। परेड के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को प्रदर्शित करते हुए देश की प्रगति में सहयोग करने का संदेश दिया गया।

रायपुर रेलवे स्टेशन पर जन जागरण हेतु लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल जी द्वारा राष्ट्रीय एकता में किए गए योगदान से संबंधित प्रदर्शनी लगाई गई। साथ ही, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर स्काउट एंड गाइड के सदस्यों द्वारा नुक्कड़ नाटक भी प्रस्तुत किया गया। नाटक के माध्यम से राष्ट्रीय एकता के लिए हिंदू-मुस्लिम-सिख-ईसाई को एकजुट रहते हुए देश की प्रगति में सहयोग करने का संदेश दिया गया।



हाइड्रोलिक री-रेलिंग उपकरण

वर्ग 'A' ए. आर. टी., रायपुर मंडल के आपदा प्रबंधन गिड, भिलाई मार्शलिंग यार्ड में स्थित है। ए. आर. टी. के संगठन में चार कोच एवं चार वैगन हैं। एक कोच मुख्यतया यांत्रिक टूल वैन है, जिसमें हाइड्रोलिक री-रेलिंग उपकरण रखे गए हैं। हाइड्रोलिक री-रेलिंग उपकरण, हाइड्रोलिक जैक्स एवं पावरपैक (पेट्रोल चलित) एवं अन्य उप साधन का संयोजन है, जिसके माध्यम से डी-रेल हो चुकी चलित माल / सवारी डिब्बा एवं लोको (डीजल, इलेक्ट्रिकल) के पुनःस्थापन का कार्य किया जाता है। ए.आर.टी., बी.एम.वाई. में एच.आर.ई. के 2 सम्पूर्ण सेट रखे गये हैं, जिसे "बेमको" कंपनी द्वारा बनाया गया है, जो कि एक भारतीय कंपनी है। इसे साल 2019 में COFMOW के माध्यम से खरीदा गया था। इसके अलावा एच. आर. ई. का एक सेट LUKAS कंपनी द्वारा बनाया गया है, जो एक जर्मन कंपनी है, इसे एच.एस.-एस.पी.ए.आर.टी. में भी रखा गया है। इसे वर्ष 2009 में खरीदा गया था। इन एच.आर.ई. के एक सेट के अंतर्गत निम्नलिखित अवयव होते हैं, जिन्हें आवश्यकतानुसार घटनास्थल पर उपयोग कर डी-रेल हो चुकी माल / सवारी डिब्बा एवं लोको (डीजल, इलेक्ट्रिकल) को री-रेल किया जाता है।

1. हाइड्रोलिक टेलीस्कोपिक जैक्स 136/65 MT - 04 नग (ऊँची)
2. हाइड्रोलिक टेलीस्कोपिक जैक्स 139/65 MT - 02 नग (छोटी)
3. हाइड्रोलिक टेलीस्कोपिक जैक्स 63/26 MT - 02 नग (ऊँची)
4. हाइड्रोलिक टेलीस्कोपिक जैक्स 63/26 MT - 02 नग (छोटी)
5. टिल्टिंग जैक्स 272 KN - 01 नग
6. एक्सल पुशर - 01 नग
7. री-रेलिंग ब्रिज(साइज) - 4.4m, 3.3m, 2.2m ,oa 1.1m (प्रत्येक एक)
8. पावरपैक (पेट्रोल चलित) - 01 नग
9. कंट्रोल स्टैंड - 01 नग
10. उच्च एवं निम्नदाब के हाइड्रोलिक पाइप - 08 नग
11. हैंडपंप- 01 नग
12. रोलर कैरिज - 02 नग
13. पुलिंग यंत्र - 01 सेट
14. डिस्टेंस बार - 01 नग



सामान्य रूप से डी-रेल हो चुके चलित स्टॉक को अंडर फ्रेम के नीचे री-रेलिंग ब्रिज एवं उपयुक्त साइज के हाइड्रोलिक जैक्स को लगाकर उठाया जाता है एवं पुशिंग जैक एवं रोलर के माध्यम से पार्श्व कटिंग की जाती है। किन्तु आजकल जो कोच चलन में हैं, उनमें बायो - टायलेट की व्यवस्था है। इसके बायो - टैंक कोच के दोनों सिरों पर लगे होते हैं एवं इन्हें उपरोक्त तरीके से पुनर्बहाली नहीं की जा सकती है। इसलिए इस तरह के कोचिंग स्टॉक, जिसमें एल. एच. बी. कोच भी शामिल है, को अन्दर की तरफ से दोनों सिराओं पर लंबे ब्रिज के ऊपर पर हाइड्रोलिक जैक्स को समक्रमिक बनाकर उठाया जाता है और री-रेल किया जाता है। इन जैक्स को समक्रमण करने हेतु "डिस्टेंस पीस" की जरूरत होती है। यह री-रेल करने का काफी प्रभावी तरीका है। हाइड्रोलिक इंजीनियरिंग का यह एक महत्वपूर्ण यंत्र है, इसके उपयोग से कम मानव शक्ति एवं कम समय में उपरोक्त काम पूरा हो पाता है।



रायपुर मंडल में सिर्फ एक ए. आर. टी. बेस होने के कारण इसकी जरूरत महीने में औसतन 3 से 4 बार पड़ती है। तात्कालिक रूप से नामित रेल इंजीनियर एवं तकनीशियनों द्वारा इसका देख-रेख किया जाता है।

- एस. साई रमेश

सहायक मंडल यांत्रिक इंजीनियर
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, भिलाई

- हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है।

- मौलाना हसरत मोहानी

- भारतीय एकता के लक्ष्य का साधन हिंदी भाषा का प्रचार है।

- टी. माधवराव

- राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है।

- अनंत गोपाल शेवडे

- राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

- महात्मा गांधी

“ रिश्ता इंसानियत का ”

मैं बिस्तर पर से उठा, अचानक छाती में दर्द होने लगा। मुझे हार्ट की तकलीफ तो नहीं है? ऐसे विचारों के साथ मैं आगे वाली बैठक के कमरे में गया। मैंने देखा कि मेरा पूरा परिवार मोबाइल में व्यस्त था।

मैंने पत्नी को देखकर कहा, "मेरी छाती में आज रोज से कुछ ज़्यादा दर्द हो रहा है, डॉक्टर को दिखा कर आता हूँ।" "हाँ, मगर सँभलकर जाना, काम हो तो फोन करना।" मोबाइल में देखते-देखते ही पत्नी बोलीं। बाकी सब परिवार वाले इससे भी बेखबर थे।

मैं ऐक्टिवा की चाबी लेकर पार्किंग में पहुँचा। पसीना मुझे बहुत आ रहा था, ऐक्टिवा स्टार्ट नहीं हो रही थी। उसी वक्त हमारे घर का काम करने वाला ध्रुव साइकिल लेकर आया। साइकिल को ताला लगाते ही, उसने मुझे सामने खड़ा देखा तो बोला, "क्यों साब ऐक्टिवा चालू नहीं हो रही है?"

मैंने कहा, " नहीं...!"

"आपकी तबीयत ठीक नहीं लगती साब। इतना पसीना क्यों आ रहा है? साब इस हालत में स्कूटी को किक नहीं मारते, मैं किक मार कर चालू कर देता हूँ।" ध्रुव ने एक ही किक मारकर ऐक्टिवा चालू कर दिया। साथ ही पूछा, "साब अकेले जा रहे हो?"

मैंने कहा, "हाँ।"

उसने कहा, "ऐसी हालत में अकेले नहीं जाते। चलिए, मेरे पीछे बैठ जाइये।"

मैंने कहा, "तुम्हें ऐक्टिवा चलानी आती है?"

"साब, बड़ी गाड़ी का भी लाइसेंस है, चिंता छोड़कर बैठ जाओ।" पास ही एक अस्पताल में हम पहुँचे। ध्रुव दौड़कर अंदर गया और व्हील चेयर लेकर बाहर आया, "साब, पैदल नहीं चलना है, इस कुर्सी पर बैठ जाओ।"

ध्रुव के मोबाइल पर लगातार घंटियाँ बजती रहीं। मैं समझ गया था, फ्लैट में से सबके फोन आते होंगे कि अब तक क्यों नहीं आया? ध्रुव ने आखिर थक कर किसी को कह दिया कि, "मैं आज नहीं आ सकता।"

ध्रुव डॉक्टर के साथ जैसे व्यवहार कर रहा था, उसे बगैर बताये ही मालूम हो गया था कि साब को हार्ट की तकलीफ है। लिफ्ट में से व्हील चेयर ICU की तरफ लेकर गया। डॉक्टरों की टीम तो तैयार ही थी, मेरी तकलीफ सुनकर। सब टेस्ट शीघ्र ही किये।

डॉक्टर ने कहा, "आप समय पर पहुँच गये हो, इसमें भी आपने व्हील चेयर का उपयोग करके अत्यधिक समझदारी का काम किया है। अब किसी की राह देखना आपके लिए बहुत ही हानिकारक है, इसलिए बिना देर किए हमें हार्ट का ऑपरेशन करके आपके ब्लॉकेज जल्द ही दूर करने होंगे। इस फार्म पर आप के स्वजन के हस्ताक्षर की ज़रूरत है।" डॉक्टर ने ध्रुव की ओर देखा।

मैंने कहा, "बेटे, दस्तखत करने आते हैं?"

उसने कहा, "साब, इतनी बड़ी जिम्मेदारी मुझ पर न डालो।"

"बेटे तुम्हारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। तुम्हारे साथ भले ही लहू का सम्बन्ध नहीं है, फिर भी बगैर कहे तुमने अपनी जिम्मेदारी पूरी की। वह जिम्मेदारी हकीकत में मेरे परिवार की थी। एक और जिम्मेदारी पूरी कर दो बेटा। मैं नीचे हस्ताक्षर करके लिख दूँगा कि मुझे कुछ भी होगा तो जिम्मेदारी मेरी है। ध्रुव ने सिर्फ मेरे कहने पर ही हस्ताक्षर किये हैं। बस अब...और हाँ घर फोन लगा कर खबर कर दो।"

बस उसी समय मेरे सामने मेरी पत्नी का फोन ध्रुव के मोबाइल पर आया। वह शांति से फोन सुनने लगा। थोड़ी देर के बाद ध्रुव बोला, "मैडम, आपको पगार काटने का हो तो काटना, निकालने का हो तो निकाल देना। मगर अभी अस्पताल में ऑपरेशन शुरू होने के पहले पहुँच जाओ। हाँ मैडम, मैं साब को अस्पताल लेकर आया हूँ, डाक्टर ने ऑपरेशन की तैयारी कर ली है और राह देखने की कोई जरूरत नहीं है।"

मैंने कहा, "बेटा घर से फोन था?"

"हाँ साब।"

मैंने मन में पत्नी के बारे में सोचा, तुम किसकी पगार काटने की बात कर रही हो और किसको निकालने की बात कर रही हो? आँखों में आँसू के साथ ध्रुव के कंधे पर हाथ रखकर मैं बोला, "बेटा चिंता नहीं करना। मैं एक संस्था में सेवाएँ देता हूँ, वे बुजुर्ग लोगों को सहारा देते हैं, वहाँ तुम जैसे ही व्यक्तियों की जरूरत है। तुम्हारा काम बरतन कपड़े धोने का नहीं है। तुम्हारा काम तो समाज सेवा का है, बेटा पगार मिलेगी, इसलिए चिंता बिल्कुल भी मत करना।" ऑपरेशन के बाद मैं होश में आया। मेरे सामने मेरा पूरा परिवार नतमस्तक खड़ा था। मैं आँखों में आँसू लिये बोला, "ध्रुव कहाँ है?"

पत्नी बोली, "वह अभी ही छुट्टी लेकर गाँव चला गया। कह रहा था कि उसके पिताजी हार्ट अटैक से गुज़र गये हैं, 15 दिन के बाद फिर आयेगा।" अब मुझे समझ में आया कि उसको मेरे अन्दर अपने पिताजी दिख रहे होंगे। हे प्रभु, उसे हिम्मत देना।

पूरा परिवार हाथ जोड़कर, मूक, नतमस्तक माफी माँग रहा था।

एक मोबाइल की लत (व्यसन) एक व्यक्ति को अपने दिल से, अपने परिवार से, अपने अस्तित्व से कितना दूर लेकर जा सकती है।

डॉक्टर ने आकर कहा, "सबसे पहले यह बताइये, ध्रुव भाई आपके क्या लगते हैं?"

मैंने कहा, "डॉक्टर साहब, कुछ सम्बन्धों के नाम या गहराई तक न जायें तो ही बेहतर होगा। उससे सम्बन्ध की गरिमा बनी रहेगी, बस मैं इतना ही कहूँगा कि वह आपात स्थिति में मेरे लिए फरिश्ता बन कर आया था।"

पिन्टू बोला, "हमको माफ़ कर दो पापा, जो फर्ज़ हमारा था, वह ध्रुव ने पूरा किया, यह हमारे लिए शर्मनाक है। अब से ऐसी भूल भविष्य में कभी भी नहीं होगी पापा।"

बेटे, हम सब आज तकनीकी में इतना फस गए हैं कि अपने आस-पास अपनों की तकलीफ को भी महसूस नहीं कर पा रहे हैं। एक निर्जीव खिलौने ने जीवित इंसान को गुलाम बनाकर रख दिया है। अब समय आ गया है कि उसका मर्यादित उपयोग करें। नहीं तो...परिवार समाज और राष्ट्र को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को उसके गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे और उसकी कीमत चुकाने के लिये तैयार रहना पड़ेगा।"

"सत्य को अपने साथ जोड़ लो, असत्य अपने आप छूट जाएगा।"

संकलनकर्ता - लोकेश विश्नोई
अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन)
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर

माह के साहित्यकार - डॉ. हरिवंश राय 'बच्चन'

जन्म : 27 नवंबर 1907

निधन : 18 जनवरी 2003

जन्म स्थान : बाबूपट्टी, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश

प्रमुख कृतियाँ : मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमन्त्रण, एकांत-संगीत, क्या भूलूं क्या याद करूं, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक, बच्चन रचनावली

विविध : 'हालावाद' के प्रवर्तक, राज्य सभा के मनोनीत सदस्य, पद्मभूषण (1976)



ओ गगन के जगमगाते दीप !

दीन जीवन के दुलारे
खो गये जो स्वप्न सारे,
ला सकोगे क्या उन्हें फिर खोज हृदय समीप?
ओ गगन के जगमगाते दीप !

यदि न मेरे स्वप्न पाते,
क्यों नहीं तुम खोज लाते
वह घड़ी चिर शान्ति दे जो पहुँच प्राण समीप?
ओ गगन के जगमगाते दीप !

यदि न वह भी मिल रही है,
है कठिन पाना-सही है,
नींद को ही क्यों न लाते खींच पलक समीप?
ओ गगन के जगमगाते दीप !

मैं जीवन में कुछ न कर सका !

जग में अधियारा छाया था,
मैं ज्वाला लेकर आया था
मैंने जलकर दी आयु बिता, पर जगती का तम हर
न सका !
मैं जीवन में कुछ न कर सका !

अपनी ही आग बुझा लेता,
तो जी को धैर्य बँधा देता,
मधु का सागर लहराता था, लघु प्याला भी मैं भर
न सका !
मैं जीवन में कुछ न कर सका !

बीता अवसर क्या आएगा,
मन जीवन भर पछताएगा,
मरना तो होगा ही मुझको, जब मरना था तब मर
न सका !
मैं जीवन में कुछ न कर सका !

पाठकों की प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं। कृपया अपने सुझाव व्हाट्सएप्प नंबर 9752877615 अथवा ई-मेल rbarsecr2006@gmail.com पर प्रेषित करें ताकि हम इसे और बेहतर बना सकें। यह ई-पत्रिका द.पू.म.रेलवे की वेबसाइट पर भी उपलब्ध है।

मंडल की गतिविधियां संबंधी विवरण एवं फोटोग्राफ्स जनसंपर्क अनुभाग, रायपुर से साभार।